भगवान महावीर

जो वि पगासो बहुसो, गुणिओ पच्चक्खओ न उवलद्धो।
जच्चंधस्स व चंदो, फुडो वि संतो तहा स खलु ॥

-बृहत्कल्पभाष्य 1224

शास्त्र का बार-बार अध्ययन कर लेने पर भी यदि उसके अर्थ की साक्षात् स्पष्ट अनुभूति न हुई हो, तो वह अध्ययन वैसा ही अप्रत्यक्ष रहता है, जैसा कि जन्मांध के समक्ष चंद्रमा प्रकाशमान होते हुए भी अप्रत्यक्ष ही रहता है।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	06
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	08
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	09
5. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
6. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
7. चातुर्मास लिस्ट	संकलन	14
8. समाचार दर्शन	संकलन	20-30
9. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-110	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	31
10. जहाज मंदिर पहेली 108 का उत्तर		33
11. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	34

प्रथम दादा गुरुदेव युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि द्वितीय आषाढ़ सुदि 11 सोमवार ता. 27 जुलाई 2015 को मनाई जायेगी।

जहाज मंदिर मांडवला द्वारा प्रकाशित दीपावली पंचांग में भूल से प्रथम आषाढ़ सुदि 11 ता. 28.6.2015 छपा है। पुण्यतिथि 27 जुलाई को मनाई जायेगी।

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 3 5 जून 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में एकाकी नहीं है। उसे सामूहिक जीवन जीना होता है। कदाच कोई व्यक्ति सोचे कि मैं जंगल में रह कर किसी गुफा में बैठकर एकाकी जीवन जी सकता हूँ। पर एकाकी तो वहाँ भी नहीं होता। क्योंकि किसी न किसी प्रकार का व्यवहार किसी न किसी के साथ करना ही होता है।

जहाँ किसी के साथ कोई व्यवहार हुआ कि जीवन सामूहिक हुआ।

वैयक्तिक जीवन और सामूहिक जीवन में अन्तर है।

वैयक्तिक जीवन केवल और केवल अपनी इच्छाओं के आधार पर जीया जाता है। वहाँ बाकी सब गौण हो जाते हैं।

इच्छा हो तब उठो... इच्छा हो तब खाओ... इच्छा हो पढो... न इच्छा हो तो यों ही सो जाओ!

न समय का प्रतिबन्ध है... न अनुशासन की मर्यादा!

पर सामूहिक जीवन इच्छा के अधीन नहीं होता। सामूहिक जीवन की अपनी एक मर्यादा होती है। उसे मर्यादा के आधार पर जीना होता है। या यों कहें कि उसे इच्छा और मर्यादा के बीच सामंजस्य बिठाना होता है।

क्योंकि इच्छाओं की अपनी कोई मर्यादा या अनुशासन नहीं होता। वह उच्छृंखल घोडे की भांति चारों दिशाओं में दौडता है। और यह तो तय है कि दो दिशाओं में दौडने वाला व्यक्ति कहीं पर भी नहीं पहुँच पाता। सोचो कि कोई व्यक्ति आधा किलोमीटर पूर्व में जायें, फिर आधा किलोमीटर पश्चिम में दौड लगाये तो वह कहाँ पहुँचेगा! कहीं पर भी नहीं।

ऊर्जा, शक्ति, समय सब कुछ लगा, पर पहुँचा कहीं पर भी नहीं।

कभी इच्छा और मर्यादा में टकराव की स्थिति उपस्थित होती नजर आये तो उसे मर्यादा का ही चुनाव करना होता है।

मर्यादा की सुरक्षा के लिये इच्छाओं का बलिदान अनिवार्य हो जाता है।

अध्यात्म से जुडा व्यक्ति जीता अन्तर के लिये है पर जीता बाहर है। आत्मा के लिये जीता है। पर उसे जीना तो बाहर के व्यवहार में ही होता है, जिसकी मर्यादा का पालन अनिवार्य है।

जहाँ मर्यादा का समापन है, वहाँ समस्या का आविर्भाव है।

गुरूदेव की कहानियाँ

7

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

दान कैसा और भोजन कैसा

एक धनपति के जीवन की घटना है। वह सोच रहा था कि पुण्य के बल पर मेरे सुखों का महल खड़ा है, पर अगले जन्म में क्या होगा।

वह व्यक्ति आत्मा में निष्ठा रखने वाला था।

प्रतिदिन प्रवचन सुनता था, इसलिए पुण्य-पाप-पुनर्जन्म आदि में विश्वास रखता था।

वह उदास बैठा-बैठा ऐसा ही चिन्तन कर रहा था कि इस शरीर को छोड़ने के बाद परलोक में पुण्य के अभाव में क्या होगा?

उसने प्रवचन में दान की महिमा सुनी थी, परिणामस्वरूप अन्नदान का निर्णय किया। एक बड़ी दानशाला खोली। वहां जुवार का दान होने लगा। चारों ओर से याचक वर्ग आने लगा, जुवार पाने लगा।

सेठ अर्थपति व धार्मिक होने पर भी थोड़ा कंजूस था। सस्ती और सड़ी-पुरानी जुवार दानशाला में बांटी जा रही थी।

सेठ सोचता था-जुवार कैसी भी हो, दान होना चाहिए। पुण्य प्रकृति का बंध तो हो ही जायेगा।

सेठ मन में मुदित था। दानशाला में हो रहे दान प्रवाह को देखकर आनन्दित था वह। सोच रहा था कि उसके सुकृत का फल-भण्डार दिनों दिन बढ़ रहा है। पुण्यवृद्धि हो रही है, परलोक सुधर जायेगा। समय बीतता जा रहा था। इधर उसके पुत्र का विवाह हुआ और बहू के रुप में लक्ष्मी घर पर आई।

उसे दानशाला का पता चला तो वह खुश हो गई और जब उसे सड़ी-गली जुवार के दान का पता चला ते वह बहुत दु:खी हो गई। ससुर साहब के इस कृत्य को उसने दान नहीं समझा। वह चतुर व सुज्ञ थी। उसने ससुर साहब को समझाने का निर्णय किया। एक योजना बनाई और उसे कार्यान्वित करने का निश्चय किया।

वह दानशाला में गई और वहाँ जो जुवार बाँटी जा रही थी, उस जुवार को लेकर रसोड़े में आई, उस जुवार की रोटी बनाई। सेठ भोजन करने बैठा तो पुत्र-वधू ने वह रोटी सेठ की थाली में रख दी।

रोटी के आकार व स्वरूप को देखकर उनकी आँखें ऊपर चढ़ गईं। उसने कहा-जुवार की रोटी क्यों?किसने बनाई?क्या गेहूँ नहीं है?क्या घी नहीं है?

पुत्रवधू नम्रता से बोली-पिताजी, यह तो शुरूआत है। शुरूआत यहाँ हो जाने से आगे कष्ट नहीं होगा। ऐसी रोटी खाने की आदत डाल देनी चाहिए। क्योंकि आपको बाद में भी ऐसी ही रोटियाँ खानी है।

धनपति आचर्श्य से उसकी भाषा को समझने का प्रयास करने लगा। भाषा की गहराई को नापने, तौलने, हृदयंगम करने का यत्न करने लगा। मगर आशय समझ न सका।

पुत्रवधू ने आश्चर्य का शमन करते हुए स्पष्ट रूपेण विनम्र बनकर कहा-पिताजी शास्त्रों में कहा है-

''दानानुसारिणी प्राप्ति:'' अर्थात् जैसा दान होता है, वैसी प्राप्ति होती है। गुजराती में कहावत है ''वावे तेवुं लणे'' जैसा बीज वैसा ही फल।

आप यहाँ याचकों को सस्ता, सड़ा हुआ धान्य दान में देते हैं। तो फिर बाद में आपको भी वही मिलेगा।

सेठ चतुर था, वह चौंका। पल भर के लिए जैसे बिजली का शॉक लगा। वह तुरन्त वहाँ से उठा, दानशाला की ओर गया। शुद्ध अच्छा धान्य दान देने का आदेश दिया।

पुत्रवधू सेठ की इस नम्रता, तत्परता, चतुरता, समझदारी को देखकर आनन्दित हो गई थी।

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री शीतलनाथ स्तवन

शीतल जिनपति प्रभुता प्रभुनी,
मुझ थी कहिय न जायजी।
अनंतता निर्मलता पूरणता,
ज्ञान विना न जणायजी ॥१॥

दसवें भगवान् श्री शीतल जिनेश्वर की प्रभुता का विवेचन मैं अपनी अल्पबुद्धि से नहीं कर सकता। उनकी अनंत शक्ति, अद्‌भुत निर्मलता और चैतन्य की पूर्णता केवलज्ञान के अभाव में नहीं जानी जा सकती।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्‌जी अपनी अल्पज्ञता का अहसास करते हुए कहते हैं कि यद्यपि मैं तेरी भक्ति औश्र गुणगान को तत्पर हो चुका हूँ फिर भी मैं जानता हूँ कि तूं सर्वज्ञ है और अल्पज्ञ हूँ। मेरे ज्ञान की सीमा कितनी? जरा सा परदा आते ही मेरी आँखें उस पार को देखने में असमर्थ हो जाती है।

-अल्पज्ञ सर्वज्ञ का विवेचन कैसे कर पायेगा?

-कुऐं का मेंढ़क कैसे जान पायेगा कि समुद्र किसे कहते हैं और उसकी गहराई कितनी अधिक है?

-प्रथम वर्ग के विद्यार्थी को क्या पता कि एम.ए. की पढ़ाई कैसी होती है?

हमारा तो विद्यालय में प्रवेश भी हुआ या नहीं, इसका भी ठिकाना नहीं है। वे तो परिपूर्ण हो चुके हैं।

प्रभुता दो प्रकार की है। एक प्रभुता पदार्थों से पाई जाती है जिसे हम आरोपित भी कह सकते हैं और दूसरी प्रभुता वह जो अन्दर से प्रकट होती है। असली प्रभुता वही है जो अन्दर से प्रकट होती है।

राजा भोज एक बार घूमने के लिये बगीचे की ओर गया हुआ था। चलती राह में उसे एक तेजस्वी संत मिल गये। ललाट का ओज ऐसा था कि भोज बरबस ही उनकी ओर आकृष्ट हो गया। वह घोडे से नीचे उतरा। जिज्ञासा के स्वरों में पूछा-आप कौन है?

-संत ने अलमस्त फकीरी से कहा- मैं सम्राट् हूँ?

-राजा ने सुना तो सकपका गया। आँखें आश्चर्य से चौडी हो गयी। उसने सोचा- यह दूसरा सम्राट् कहाँ से पैदा हुआ?अगर यह सम्राट् है तो मैं क्या हूँ? दो सम्राट् तो हो नहीं सकते! कुछ पलों के लिये स्वयं भोज को अपना अस्तित्व डूबता नजर आया। उसने तीखे स्वरों में पूछा- अगर तुम स्वयं को सम्राट् मानते हो तो तुम्हारी सेना कहाँ है?

हँसते हुए संत ने कहा- सेना उन्हें चाहिये जिनके शत्रु हो। पूरा विश्व मेरा अपना है। मुझे किसी से खतरा नहीं है और न मैं किसी के लिये खतरा हूँ। फिर मुझे सेना की क्या आवश्यकता है?सम्राट् ने पूछा- तो आपका महल कहाँ है? पत्नियाँ, दास दासियाँ कहाँ है?

संत ने मुस्कुराकर कहा- लगता है तुम मूर्ख हो! अरे! जब सारी धरती मेरी अपनी है तो एक महल की दीवारें बनाकर क्यों मैं स्वयं के उस छोटे से घेरे में बांधू? जब व्यक्ति एक घर बनाता है तो अन्य सारे घरों से उसका संबंध टूट जाता है और जब एक भवन की कारा को तोडकर वह आगे बढ़ जाता है तो सारे भवनों के द्वार उसके लिये खुल जाते है। मैंने एक सीमा को तोडकर सारी धरती को अपना लिया है। पत्नी उन्हें चाहिये जो अपनी शक्ति और ऊर्जा को नियंत्रित करने में सक्षम हूँ तो क्यों अपनी अमूल्य ऊर्जा को निरर्थक करूँ! दास दासी उन्हें चाहिये जो स्वयं निकम्मे और आलसी हो।

राजा उस संत के उत्तर से मुग्ध हो उठा। और अधिक संवाद बढाने के लिये उसने पूछा-तो आपका खजाना कहाँ है? राज्य चलाने के लिये धन भी तो चाहिये!

संत ने कहा-लगता है तुम मेरे बारे में कुछ ज्यादा ही उत्सुक हो। ताो सुनो! मुझे खजाने की कहाँ जरूरत है? जिसका अपनी कामनाओं पर नियंत्रण न हो, वही व्यक्ति पदार्थों को कामना पूर्ति का माध्यम बनाताा है। मैं अपनी कामनाऐं रखता ही नहीं हूँ। मेरा खजाना मेरे अन्तर में है।

राजा भोज उन अद्‌भुत सम्राट् के चरणों में झुक गये। वास्तविक प्रभुता के स्वामी तो आप ही हैं। उस प्रभुता को कोई खतरा नहीं है। कोई उसे छिन्न भिन्न नहीं कर सकता।

परमात्मा की प्रभुता अन्तर से प्रकट हुई है। और जो चीज अनुभव से प्रकट होती है वह कभी अन्य द्वारा विवेच्य नहीं हो सकती। अन्दर से निःसृत प्रभुता को पाने के लिये कुछ नहीं करना है। मात्र उपर आये आवरणों को हटाना है। बाहर से चाहे प्रभुता आये, चाहे सत्ता वह तो अहंकार को ही पुष्ट करेगी और भीतर से अनावृत होती है तो वह सहज ही होगी। केवलज्ञानी ही प्रभु की अखंड चेतना के आनंद को जान सकता है। श्रीमद् स्वयं के अल्पज्ञ मानकर कहते हैं यद्यपि वह मेरे द्वारा ज्ञानगम्य नहीं है, पर श्रद्धा गम्य जरूर है।

चरम जलधि जल मिणे अंजलि,
गति झिंपे अतिवाायजी।
सर्व आकाश उल्लंघे चरणे,
पण प्रभुता न गणायजी, शी. ॥२॥

-क्या कोई विशाल समुद्र को अपनी अंजलि में ग्रहण कर सकता है?

-महाभयंकर प्रलय काल ही हवा के साथ कोई गति कर सकता है?

-क्या समस्त आकाश को अपने दोनों पाँवों से नापने की धृष्टता कर सकता है?

ये सारे कार्य किसी दैवी कृपा से संभव हो भी जाय तो भी प्रभु की प्रभुता का कोई माप नहीं होता। प्रभु की अद्‌भुत और असीम प्रभुता को कोई अल्पज्ञ नापना चाहे तो भी उसमें उसके अज्ञ होने की ही छाप लगेगी। इसे पद्य में श्रीमद् जी ने व्यावहारिक अनेक प्रतीकों द्वारा प्रतिबिम्बित किया है। अद्‌भुत और अपरंपार है प्रभु की आत्म संपदा! एक अंजलि में क्या विराट् सागर के पानी को बाँधने का दुःसाहस कोई कर पाया है? तीर्थंकर प्रभु की गंभीरता तो सागर से भी अधिक है। इसीलिये तो 'सागर-वर-गंभीरा' कहकर परमात्मा को संबोधित किया है। वैसे सारी उपमाऐं प्रभु की अनंत संपदा के समझ गौण और निरर्थक है। बस प्रभु प्रभु ही है। भयंकर महाप्रलय की तूफान की गति यद्यपि वैज्ञानिक ग्राफ पर उतर सकती है पर क्या कोई अपने ही आधार पर उसे चुनौती दे सका है? असंभव है कि कोई व्यक्ति तूफानी हवा के साथ गति करे। विशाल और असीम आकाश! जिसकी कोई अंतिम सीमा नहीं क्या उसे विराट् आकाश को अपने पाँवों द्वारा नापना संभव है। माना कोई चमत्कार हो जाय फिर भी प्रभु की प्रभुता को जानने और समझने के लिये तो केवलज्ञान की ही भूमिका चाहिये।

प्रस्तुत पद्य श्रीमद्‌जी के हृदय की असीम कोमलता और भावुकता का प्रतीक है। प्रेम उनकी नस-नस में व्याप्त हो गया है। परमात्मा और उनका आत्मिक वैभव, इसके अतिरिक्त कहीं उनका रूचिभाव नहीं है। हृदय का समर्पण और एक निष्ठा छलक-छलक कर बाहर आ रही है। हृदय का हर कोना प्रभु के प्रेम में उन्मत्त हो रहा है। संपूर्ण संसार उनके लिये शून्य हो चुका है। समर्पण के घुंघरू बांध वे प्रभु की भक्ति में तल्लीन हो भावनृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

जिनवाणी का बरसेगा अमृतजल

सकल संघ को सस्नेह निमंत्रण

चातुमासि के सुनहरे अनुपमपल
लिखियो नेतरो लाड़सु
आवारी फुर्सत राखजो, मोको बड़ो अनमोल है
पुण्य रो फल थे चाखजो

सुप्रसिद्ध लोह की नगरी होस्पेट में

भव्यातिभव्य चातुर्मास नगर प्रवेश 19.07.2015 रविवार

आज्ञा प्रदाता

प. पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर गुरुदेव
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

पावन निश्रा

महत्तरा पद विभुषिता श्री चंम्पा श्री जी म.सा. की विदुषी शिष्या

प.पू. मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्री जी म.सा.

प.पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभा श्री जी (भागु) म. आदि ठाणा 10

पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा.

संपूर्ण चातुर्मास लाभार्थी परिवार

स्व. शा. गिरधारीलालजी पालरेचा

स्व. श्रीमती सुखीदेवी पालरेचा

शा जेठमल बाबूलाल रतनचंद दिलीपकुमार महेंद्रकुमार
कान्तिलाल आनंद कुमार भरत कुमार श्रीपाल सिद्धार्थ
अरिहन्त श्रेयांश हर्षित एवम् दक्ष पालरेचा खिमाणी
परिवार मरूधर में मोकलसर हाल होस्पेट

श्री वासुपूज्य स्वामी जिन मंदिर दादावाड़ी एवम् श्रीमद् राजचंद्र ध्यान मन्दिर
M J Nagar, Hospet (Karnataka)
व्यवस्थापक कमेटी के तत्वावधान में

Firm : Babulal Jain & Co., Arihant Complex, Hampi Road, Hospet-583201

चातुर्मास स्थल
श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन
1# M.J. nagar, Dem Road,
HOSPET - 583021 (karnataka)

सम्पर्क सूत्र
Babulal Palrecha - 09448358112
Mahendra kumar - 09448359788
Prakash Chouhan
09845711450, 8951141450

38
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

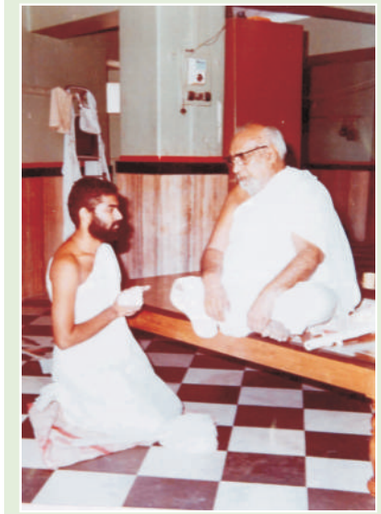

पूज्य गुरुदेवश्री का अपना एक अनूठा अनुशासन था। वे ज्ञान, ध्यान की शिक्षा देने के साथ साथ अनुशासन की शिक्षा ज्यादा जोर से दिया करते थे।

चूंकि पूज्यश्री तेरापंथ से आये थे अत: अनुशासन उनकी रग रग में बसा हुआ था। थोडी-सी भी अनुशासनहीनता उन्हें पसन्द न थी।

कैसे बैठना! कहाँ बैठना! कैसे बोलना! पूज्यश्री जब किसी से वार्तालाप करते हों, तो बीच में किसी का भी बोलना उन्हें पसन्द न था। यह स्वाभाविक भी था। बीच में बोलना अविवेक की श्रेणी में आता है।

मैं ज्यादा समझता न था। अनुभवहीनता कहें या अहंकार कहें, जो भी! पर मैं कभी कभी बोल जाया करता था।

पूज्यश्री किसी श्रावक से वार्तालाप कर रहे थे। मेरे हाथ में संस्कृत व्याकरण की पुस्तक थी। सबकी धारणा के अनुसार तो मैं पढाई कर रहा था। पर बाल सुलभ चंचलता के कारण मैं बातें सुन रहा था। श्रावक ने कुछ पूछा था। पूज्यश्री ने कहा था- मुझे कुछ ख्याल नहीं है, बात में बताऊँगा।

मुझे वह पता था। मुझे लगा कि मुझे कुछ आता है, यह प्रकट करने का अच्छा अवसर है। मैं तुरंत बीच में बोल पडा। पूज्यश्री ने मेरी ओर देखा। कुछ बोले नहीं। श्रावक को उत्तर दे दिया गया।

पर बाद में मुझे समझाते हुए कहा- बीच में नहीं बोलना चाहिये, भले तुम्हें उस बात का पता हो! यह अविनय भी है, अविवेक भी! मैं यदि तुम्हें पूछता तो तुम्हें बोलना चाहिये था। आगे से ध्यान रखना।

मैं समझ गया कि मेरा बोलना उचित न था। पर मैं स्वभाव नहीं बदल पाया था। इस प्रकार की कोई बात होती तो मैं बोल पडता। बाद में मुझे पश्चात्ताप होता।

एक बार एक प्रतिष्ठा के बाद पूज्यश्री के साथ हम सभी का विहार था। साथ में साध्वी मंडल भी था। पूज्यश्री साध्वी मंडल के साथ दोपहर में चर्चा कर रहे थे। मैं एकदम नजदीक तो नहीं, पर 12 फीट की दूरी पर बैठा था। मेरा पूरा ध्यान उन बातों में था। कोई ऐसी बात आई और मैं तुरंत बोल पडा।

बोलने के बाद तो मैं समझ गया कि यह ठीक नहीं हुआ। पूज्यश्री ने इशारा किया। मैं समझ गया कि मुझे नहीं बोलना चाहिये था। यह अनुशासन व मर्यादा के विपरीत था।

पूज्यश्री ने बाद में मुझे प्रेमपूर्ण डांट के साथ समझाया था।

मैं आज जब वह घटना याद करता हूँ तो घोर पश्चात्ताप से भर जाता हूँ।

आत्मीय आमंत्रण

निर्मल निमंत्रणम्

सुदंर स्वागतम्

।। श्री धर्मनाथाय नमः ।।

दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त मणिधारी जिनचंद्र जिनकुशल जिनचंद्र गुरूभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरूभ्यो नमः

पू. प्रर्वतिनी श्री पुण्य-चम्पा जितेन्द्र गुरूवर्यायै नमः

चैन्नई महानगर की धर्ममयी वसुंधरा पर श्री धर्मनाथ मंदिर के पवित्र प्रांगण में

प.पू. प्रथम दादा साहेब एकावतारी श्री जिनदत्त सूरीश्वरजी म.सा. की 861वीं स्वर्गारोह तिथि व

चम्पा- जितेन्द्र ज्योति प.पू. धवलयशस्वी श्री विमल प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के

आज्ञा प्रदता

प.पू. गणाधीश प्रवर
उपाध्याय भगवंत
गुरूदेव
श्री मणिप्रभसागरजी
म.सा.

भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

हार्दिक आमंत्रण

दिव्याशिष

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता
श्री चम्पाश्री जी म.सा.

प. पू. मंडल संस्थापिका प्रवर्तिनी
श्री विचक्षणश्री जी म.सा.

प. पू. समता साध्विका
श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा.

प्रवेश मुहूर्त - द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 11 सोमवार ता. 27-7-2015 प्रातः 8.30 बजे

आपको सूचित करते हुए हमारे हृदय में परम हर्षोल्लास की लहरे लहरा रही है। इस वर्ष हमारे संघ की भाव भरी विनंती को स्वीकार कर जिनवाणी की अमृत वर्षा करने हेतु प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा हमारे नगर में आराधना, साधना, उपावसना के दीप प्रगटाने चातुर्मास के लिए पधार रहे है। चातुर्मास दरम्यान प्रतिदिन प्रातः ९.३० बजे प्रवचन शनिवार, रविवार को संस्कार शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं, तप आदि विविध धार्मिक अनुष्ठान होंगे। अतः प्रवेश प्रसंग पर आप श्री सकल संघ पधारकर जिनशासन की शोभा बढ़ाएं व हमारे हर्षोल्लास में अभिवृद्धि करें।

विनीत
श्री जिनदत्त सूरि जैन मण्डल
85 अम्मन कोयल स्ट्रीट
चैन्नई - 600079
फोनः 044-25207875, 044-25297936

चातुर्मास स्थल
श्री जिनदत्त सूरिजैन धर्मशाला
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर
85 अम्मन कोयल स्ट्रीट
चैन्नई- 600079

संर्पक सूत्रः-
098410-96750, 093808-32808

32
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

ओह! मैंने यह क्या किया?

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ।।2।।

मुनिवेश एवं मुनिधर्म का परित्याग करके वह धर्मभष्ट्र बना साधु बाद में तीव्र पश्चात्ताप एवं दुःख का अनुभव उसी प्रकार करता है, जैसे महीतल पर गिरा हुआ इन्द्र। इन्द्र का जीवन तो देखो...

- साधनों का लगा अम्बर।
- रत्नों-हीरों के चमकते कंगूरे।
- स्वर्ण- रजतमय दिव्य देवविमान।
- मल-प्रस्वेद रहित सुन्दर सुवासित देह संपदा।
- देवियों का अनुपम स्नेह भाव और सहवास
- दास-दासियों की कतारें।
- कल्पवृक्षों का महाखजाना।
- विविध महालब्धियों की प्राप्ति।

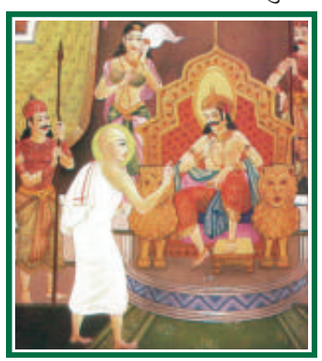

ऐसी भौतिक सुविधाओं के बीच जीने वाला इन्द्र अपने आयुष्य की पूर्णता के समय धरती के तुच्छ-भोग आदि के कारण मनोमन अतीव खिन्नता का अनुभव करता है। स्थानांग सूत्र में कहा गया कि जब देव की मृत्यु निकट आती है, तब तीन बातों के कारण पुनः पुनः उद्विग्न होता हैं-

1. ओह! मुझे इस दिव्य द्युति, कान्ति और ऋद्धि का त्याग करना पडेगा।
2. ओह! मुझे सर्वप्रथम माता के ओज और पिता के शुक्र (वीर्य) रूप भयंकर बीभत्स दुर्गंधपूर्ण आहार करना पडेगा।
3. ओह! मुझे अशुचि और अन्धकार से परिपूर्ण गर्भ में रहना पडेगा।

संयम जीवन में राजाओं का महाराजा का बना हुआ साधु पुनः गृहवासी बनकर महाशोक और परम दुःख का अनुभव करता है।

- दिन-रैन सताती व्यापार की चिन्ता!
- घर वालों के तीखे तेवर और अपमानजनक शब्द।
- सुबह-शाम परेशान करती दुनिया की व्यंग्य भरी निगाहें।

न तो कोई उसका आदर करता है, न सम्मान करता है।

जब सब उसे हेय दृष्टि से देखते हैं, तब उसे बहुत याद आता हैं-

- संयम का सुन्दर-सुवासित जीवन।
- ठौर-ठौर सम्मानसूचक सामैया एवं वर्धापना।
- चरणों में वंदना के लिये उद्यत सेठ और साहूकार।
- दर्शन और स्पर्शन को तरसते भक्ति से छलकते भक्तजन।

ओह! मैने यह क्या किया? सब कुछ पाकर सब कुछ खो दिया। अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं। विश्वास भी नहीं, प्रकाश भी नहीं। एक मात्र प्यास...प्यास...प्यास।

कदाच् कोई उत्प्रव्रजित श्रमण पश्चात्ताप करता हुआ अपने दुष्कृत्य पर पीडापूर्ण हो अश्रु बहाता है तथापि अब उसके लिये संसार के बंधनों से मुक्त होना उसी प्रकार दुष्कर कार्य होता है, जैसे पानी में पत्थर की नाव को तिराना।

उस समय एक ही विचार हृदय कक्ष का चक्कर लगाता है- औह। मैं कितना मूढ... कितना प्रज्ञाहीन कि मैंने योग साम्राज्य के बदले जो भोग का राज्य मांगा, यह तो हाथी के बदले गधा खरीदने के समान मूर्खता भरा कार्य हुआ।

आत्मीय आमंत्रण | निर्मल निमंत्रणम् | सुदंर स्वागतम्

।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।

दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त मणिधारी जिनचंद्र जिनकुशल जिनचंद्र गुरूभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरूभ्यो नमः

पू. प्रर्वतिनी श्री पुण्य-चम्पा जितेन्द्र गुरूवर्यायै नमः

चैन्नई महानगर TVH LUMBINI SQUARE

SHANTI JINALAYA के पवित्रा प्रांगण में

चम्पा- जितेन्द्र ज्योति प.पू. धवलयशस्वी श्री विमल प्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता

प.पू. साध्वीवर्या श्री विश्वरत्ना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

हार्दिक आमंत्रण

प्रवेश मुहूर्त- द्वितीय आषाढ़ सुदि शनिवार ता. 25-7-2015 प्रातः 8.30 बजे

आज्ञा प्रदता

प.पू. गणाधीश प्रवर उपाध्याय भगवंत गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

दिव्याशिष

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्री जी म.सा.

प. पू. मंडल संस्थापिका प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्री जी म.सा.

प. पू. समता साध्विका श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा.

कृपा दृष्टि

प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.

आपको सूचित करते हुए हमारे हृदय में परम हर्षोल्लास की लहरे हिलोरे ले रही है। इस वर्ष हमारे संघ की भाव भरी विनंती को स्वीकार कर प. पू. गुरुवर्या श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. ने अपनी शिष्याओं को चातुर्मासार्थ भेजने की स्वीकृति प्रदान की है। अतः हम सदैव गुरुवर्या श्री के ऋणि हरेंगे। चातुर्मास दरम्यान प्रतिदिन प्रवचन, संस्कार शिविर व विविधा प्रतियोगिताएँ आदि धार्मिक अनुष्ठान होंगे। आप इस चातुर्मास प्रवेश व चातुर्मास में पधारकर संघ को लाभान्वित करें।

विनीत
SHRI SHANTI VALLABH
TVH LUMBINI
JAIN SANHG

संपर्क सूत्र
ASHOK JAIN
098844 28800
SHEETAL SOLANKI
099624 63111

चातुर्मास स्थल
''मोक्ष मार्ग'' 4013,
सिद्धि वल्लभ आराधना भवन
127-A. BRICKLIN ROAD
PURASAWAKKAM
CHENNAI 600007

33
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संयमभ्रष्ट साधु की अन्तर्व्यथा

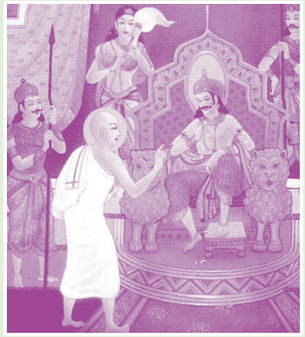

संयमभ्रष्ट साधु संसारवासी बनने के बाद जिन-जिन संक्लेशों को प्राप्त होता है, उसका सांगोपांग और उपमायुक्त वर्णन दशवैकालिक सूत्र में आँखों देखे हाल की तरह वर्णित है।

तृतीय श्लोक की व्याख्या

जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ।।3।।

अर्थात् दीक्षा पर्याय में जगत द्वारा वंदित-अभिनंदित साधु जब मुनि धर्म को छोडकर गृहस्थ बन जाता है, तब वह उसी तरह पश्चात्ताप से पीडित होता है, जैसे देवलोक से पतित देव व्यथित होता है।

चतुर्थ श्लोक की व्याख्या-

जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ।।4।।

अर्थात् प्रव्रजित काल में साधु पूज्य होता है पर उत्प्रव्रजित होकर जब अपूज्य हो जाता है, तब वह उसी प्रकार अनुताप करता है जैसे राज्य भ्रष्ट राजा।

अरे! नरेन्द्र और देवेन्द्र जिनके चरणों की पूजना-अर्चना करते हैं, वही साधु यदि भ्रष्टाचार के कारण संसार के भोगों की आशंसा करता है, तो वह पशु से गया बीता है। बेचारे पशु में तो समझ और सद्बुद्धि नहीं होती, अतः वह अखाद्य में चित्त लगाता है पर बुद्धिमान साधु मिष्ठान्न छोडकर विष्टा को चाटता है उसे क्या कहा जाये?

जो साधु संयम का परम परिधान धारण करके विश्ववंद्य और विश्वपूज्य बन गया है, वही जब पशु तुल्य व्यवहार अपनाता है, तब उसे किस अपशब्द से धिक्कारा जाय?

गुरूजनों ही हजार शिक्षा के बाद भी जब वह साधु विषय- सुखों के लालच में पुनः गृहस्थावस्था में प्रवेश करता है, तब भरपूर पछताता है। उसकी रातों की नींद उड जाती है, दिन का चैन खो जाता है। न भूख लगती है, न प्यास जगती। कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

पहले पूज्य, बाद में अपूज्य।
पहले वंदनीय, बाद में अवंदनीय।।

पहले लोग उसकी प्रशंसा करते थकते नहीं थे, वे ही उसकी निंदा करते अघाते नहीं हैं-

अरे! देखो इस साधु को। पूर्वजों के नाम पर कालिख पोत दी। खुद की तो क्या, सारे परिवार की नाक कटवा दी पर इसे न तो लोक की लाज है, न शर्म की नाक है। खौलते तेल से भी भयंकर प्राणलेवा ऐसे शब्द उसके सारे सपनों को चूर-चूर कर देते हैं।

संयमभ्रष्ट साधु मन ही मन परितप्त, संत्रस्त और आकुल-व्याकुल होकर ऐसे ही परिताप करता जैसे राज्य भ्रष्ट राजा और पदभ्रष्ट देव। अन्ततोगत्वा उसकी शर्मीन्दगी की कोई सीमा नहीं रहती।

कभी-कभी उसका दुःख और परिताप यहाँ तक बढ जाता है कि वह आत्महत्या तक कर बैठता है।

एक देव देवलोक में चर-अनुचर, दास-अनुदास के द्वारा वंदित होता है पर जब उसके जीवन का दीपक बुझ जाता है, तब वह अत्यन्त व्यथित होता है।

भूपाल जब कंगाल बन जाता है, तब वह अत्यन्त पीडित होता है क्योंकि कहाँ तो राज्य का ऐश्वर्य और कहाँ गरीबी की कंगालता। ठीक ऐसा ही तो फर्क संयमी और संयमभ्रष्ट के जीवन में दिखना है।

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास – 2015

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- प. पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पू. गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 6
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी, एम.जी. रोड, **पो. रायपुर**-४92 001 (छ.ग.) फोन-0771-2226085, मुकेश : 9784326130
Email- jahajmandir99@gmail.com 1

पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा २
सुगनजी का उपासरा ट्रस्ट,
रांगडी चौक
पो. बीकानेर-334 001 (राज.) 2

पू. गणि श्री पूर्णानंद सागरजी म. ठाणा-1
जैन श्वे. दादावाड़ी
मोती डूंगरी रोड़,
पो. जयपुर-302 004 (राज.)
फोन- 0141-2601457 3

पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.
पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा2
जैन धर्मशाला, चुडीघरों का मोहल्ला,
पो. फलोदी-342 301 (राज.)
फोन 4

पू. मुनि श्री ललितप्रभ सागरजी म. ठाणा-3
जैन श्वे. मंदिर
पो. भीलवाड़ा-311 001
(राज.)
फोन- 5

पू. मुनि महायश सागरजी म. ठाणा-1
जैन श्वे. तीर्थ
पो. ओसियां
जिला- जोधपुर (राज.) 6

पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. ठाणा 6
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला
पो. पालीताना-३64 270
(गुजरात)
फोन-02848-252653, 94270-63069 7

पू. मुनि श्री मणिरत्न सागरजी म. ठाणा-2
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, जैन छोटी दादावाड़ी, आर ब्लॉक, साउथ-एक्सटेंशन भाग-2, अंसल प्लाजा के सामने
पो. नई दिल्ली-110 049 फोन-011-26254879 26255728 8

पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. ठाणा-11
श्री जैन श्वे. मंदिर
पो. बालाघाट-481 001
(म.प्र.) 9

पू. मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म. 1
श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वे. मंदिर
मीरा रोड़, मानसरोवर
जयपुर-302 020 (राज.)
फोन- 10

पूज्य मोहनलालजी म.सा. समुदाय

पू. मुनि श्री कुशलमुनिजी म. ठाणा-4
जयानन्द भवन, ओसवाल मोहल्ला
पो. भानपुरा-458 775
जि. मन्दसौर (म.प्र.) 1

पू. मुनि श्री विनयमुनिजी म. ठाणा-3
श्री लाड़ श्रीमाली पंचनी वाड़ी
आराधना भवन के सामने, वाणियावाड़
वेजलपुर, **पो. भरूच**-392 001
(गुजरात) 2

विचक्षण मण्डल

पू. महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म. ठाणा-3
श्री दादावाड़ी संस्थान ट्रस्ट
28 गणेश कॉलोनी रामबाग
पो. इन्दौर-452 002 (म.प्र.)
फोन-0731-2423183 1

पू. साध्वी श्री चन्द्रकला श्रीजी म. ठाणा-5
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
पो. मालपुरा-304 502
जि. टोंक (राज.)
फोन-01437-226243 2

पू. साध्वी श्री मनोहर श्रीजी म. ठाणा-5
श्री जैन श्वे. मंदिर हालावाला, नेहरू गेट,
पो. ब्यावर-305 901
जि. अजमेर (राज.)
फोन-94140-09306 3

पू. साध्वी श्री सुरंजना श्रीजी म. 9
श्री कुशलसूरि आराधना भवन
T./102-103 संजीव ऑटोरेडियम के पास
न्यू R.T.O. ऑफिस, T.T. 14 अडालज रोड
पो. सूरत-395 003 (गुजरात)
फोन-96386-61034 4

पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 10
सैलाना वालों की हवेली
मोहन टॉकिज
मो. रतलाम-457 001 (म.प्र.)
फोन-98277-90169 5

पू. साध्वी श्री भाग्ययशाश्रीजी म. ठाणा-4
श्री राजस्थान जैन श्वे. संघ (पूर्व विभाग)
28 सोमवार पेठ
पो. पूणे-411 011 (महा.)
फोन-020-26129403 6

पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. सोसायटी
पो. शिखरजी मधुबन-825 329
(झारखण्ड) 7

पू. साध्वी श्री काव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जैन श्वे. जिनदत्तसूरि दादावाड़ी
पाल बिचला
पो. अजमेर-305 001 (राज.)
फोन-0145-2620357 8

पू. साध्वी श्री चंदनबालाश्रीजी म. ठाणा 6
श्री जैन श्वे. पार्श्वनाथ मंदिर
पो. हिंगणघाट-442 301
जि. वर्धा (महा.) 9

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास – 2015

पू. साध्वी श्री सुरेखा श्रीजी म. ठाणा-6
श्री जैन श्वे. चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर
19, महावीर बाग, एयरपोर्ट रोड
पो. इन्दौर-452 002 (म.प्र.) 10

पू. साध्वी श्री हर्षयशाश्रीजी म. ठाणा-3
श्री शांतिनाथ भगवान जैन मंदिर ट्रस्ट
गाँधी चौक
पो. महासमुंद-493 445 (छ.ग.) 11

पू. साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म. 4
श्री जैन श्वे. मंदिर
सराफा लेन, गाँधी चौक
पो. चन्द्रपुर-442 401 (महा.) 12

पू. साध्वी श्री अतुलप्रभाश्रीजी म. 3
जैन श्वे. मंदिर
C/o दीपक दाल मिल, स्टेशनगंज
पो. नरसिंहपुर-478 001 (म.प्र.)
फोन-07792-236853 13

पू. साध्वी श्री प्रभंजनाश्रीजी म. ठाणा-3
श्री अजितनाथ जैन श्वे. मंदिर
इतवारी भाजी मंडी
पो. नागपुर-440 002 (महा.) 14

पू. साध्वी श्री समदर्शिता श्रीजी म. 1
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताणा-364270
जिला-भावनगर (गुज.)
फोन-02848-252653 15

प्रेम मण्डल

पू. साध्वी श्री विनोद श्रीजी म. ठाणा 3
खरतरगच्छ उपासरा गुजराती कटला,
नारेलों की पोल
पो. पाली 306401 (राज.)
फोन- 1

पू. साध्वी श्री सुलोचना श्रीजी म. ठाणा 8
जैन श्वे. आदेश्वर भगवान मंदिर
43/46 जोडभावी पेठ, मंगलवार बाजार के पास
पो. सोलापुर-413 002 (महा.)
फोन- 0217-2327430 2

पू. साध्वी श्री सुलक्षणा श्रीजी म. ठाणा 4
आचार्य जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन
हमीरपुरा
पो. बाड़मेर-344 001 (राज.)
फोन- 3

पू. साध्वी श्री कल्पलता श्रीजी म. ठाणा-10
जैन श्वे. मू.पू. संघ
प्लॉट नं. 362, वार्ड नं. 1213
पो. गांधीधाम-370 201
(कच्छ-गुज.) फोन- 4

पू. साध्वी श्री प्रियंवद श्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म. ठाणा-6
कनक आराधना भवन, काली पोल के पास
पो. नागौर-३41 001 (राज.)
फोन- 5

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिता श्रीजी म. ठाणा-6
श्री जैन श्वे. कुशल गुरु मंदिर दादावाड़ी
जवाहर बाग के पास, देवलगाँव राजा रोड
सुखसागर नगर,**पो. जालना**-431203 (महा.)
फोन-94231-56402 6

पू. साध्वी श्री प्रियरंजना श्रीजी म. ठाणा-3
श्री जैन श्वे. दादावाड़ी,दादा साहेबनां
पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद-380 009 (गुज.) 7

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजना श्रीजी म. ठाणा-2
श्री जिनदत्तसूरि दादाबाड़ी,सूरजपोल के-
बाहर, मेवाड मोटर्स लिंक रोड
पो. उदयपुर-313 001 (राज.)
फोन-98877-57200 8

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी ठाणा-3
जैन श्वे. मंदिर, अलांगयम रोड
पो. तिरूपात्तुर-635 601
जि. वेल्लूर (तमिलनाडु)
फोन- 9

पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजना श्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन आराधना भवन
महावीर रोड़, मारवाड़ी गली
पो. सिंधनूर-584 128, जि. रायचूर (कर्नाटक)
फोन-94484-80975 10

पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजना श्रीजी म. ठाणा 4
श्री अंजार खरतरगच्छ जैन संघ
श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी, वरसामेडी नाका
पो. अंजार-370 110 (कच्छ-गुजरात)
फोन-89809-82990 11

पवित्र मण्डल

पू. साध्वी श्री दिव्यप्रभा श्रीजी म. ठाणा 4
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला
पो. पालीताना-364 270 (गुजरात)
फोन-094270-63069
02848-252653 1

पू. साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म.
विश्व ज्योति श्रीजी म. ठाणा 3
श्री शान्तिनाथ श्वे. मंदिर
404, टी.एच. रोड, पुराना धोबी पेठ
पो. चैन्नई-600 021 (तमिलनाडु)
फोन-044-25904661 2

मनोहर मण्डल

पू. प्रवर्तिनी कीर्त्तिप्रभा श्रीजी म. ठाणा 4
नरेशजी शांतिलालजी पारख
श्री कुशल स्टोर्स
नया बाजार, शॉप नं. 27
पो. वडोदरा-390 006 (गुज.) 1

पू. साध्वी श्री तरूणप्रभा श्रीजी म. ठाणा-4
श्री जैन दादावाड़ी टेम्पल
38 Khaja peth
Pallakarai
TIRUCHIRAPALLI-620 001 (T.N.) 2

मनोहर मण्डल

पू. साध्वी श्री सुलक्षणा श्रीजी म. ठाणा 2
जैन दादावाड़ी मंदिर
पो. महरौली-110 003
(दिल्ली)
फोन- 3

पू. साध्वी श्री मनोरंजना श्रीजी म. ठाणा 3
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर
जामा मस्जिद के पास, गुलशन मोहल्ला
पो. आगरा-282 003 (यू.पी.)
फोन- 4

पू. साध्वी श्री सुभद्रा श्रीजी ठाणा-2
जैन खरतरगच्छ भवन
1945, कच्चा कट्टा, कुशलराई,
किनारी बाजार, चाँदनी चौक
दिल्ली-110 006 फोन- 5

पू. साध्वी श्री प्रियंकरा श्रीजी म.
श्रीजैन श्वे. मंदिर
शुक्रवारी चौक, नेहरू रोड
पो. सिवनी - 480 661 (म.प्र.)
फोन- 6

पू. साध्वी श्री लयस्मिता श्रीजी ठाणा 3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ कुशल भवन
शांतिनगर, **पो. सांचोर** - 343 041
(जालोर-राज.) फोन : 02979-283154 7

पू. साध्वी श्री शुभंकरा श्रीजी म.
श्रीजैन श्वे. मंदिर
दुर्गा टॉकिज के सामने, कोर्ट रोड
पो. शिवपुरी-473 551 (म.प्र.)
फोन- 8

पू. साध्वी श्री मृगावती श्रीजी म.
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी
बाड़मेर ट्रस्ट, महावीर मार्ग, कॅम्प रोड
पो. मालेगाँव-423 203, जि. नासिक
(महा.) फोन- 9

पू. साध्वी श्री संघमित्रा श्रीजी म. ठाणा-3
कुशल लब्धि भवन
सोनी बाजार, झांसी की रानी रोड
पो. मांडवी (कच्छ-गुजरात) 370465
फोन- 10

पू. साध्वी श्री अभ्युदया श्रीजी म. ठाणा 3
प्राच्य विद्यापीठ
दुपाड़ा रोड
पो. शाजापुर (म.प्र.)
फोन- 11

पू. साध्वी श्री भव्योदया श्रीजी म. ठाणा 2
महावीर भवन
पो. मोकलसर-344 044
जि. बाड़मेर (राज.)
फोन- 12

सज्जन मण्डल

पू. साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. ठाणा-7
श्री जैन श्वे. श्री संघ
पो. सिवाना-344 043
जि. बाड़मेर (राज.)
फोन-98440-66301 1

पू. साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म. ठाणा-3
बाबू माधोलाल धर्मशाला
आरीसा भवन के सामने
पो. पालीताणा-364 270, जि. भावनगर (गुज.)
फोन-02848-253701 2

पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी म. ठाणा-4
श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट
89/90 गोविन्दप्पा रोड, बसवनगुड़ी
स्टेट बैंक ऑफ माहेश्वरी के सामने
पो. बेंगलोर-560 004 (कर्नाटक)
फोन-98442-51115 3

पू. साध्वी श्री शुभदर्शना श्रीजी म. ठाणा-3
महावीर भवन, डॉ. करणचंद हॉस्पिटल के पीछे
पो. किशनगढ शहर -305 802
जि. अजमेर (राज.)
फोन-94140-11407 4

पू. साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा श्रीजी म. ठाणा-3
श्री आयंबिल शाला भवन, विमलनाथ मंदिर
पटवारियों की वास,
पो. बालोतरा-344 022
जि. बाड़मेर (राज.) फोन-94142-70702 5

पू. साध्वी श्री कनकप्रभा श्रीजी म. ठाणा-3
विचक्षण भवन, शिवजी राम भवन के सामने
एम. एस. बी. का रास्ता, जौहरी बाजार
पो. जयपुर-302 003 (राज.)
फोन - 0141 - 2563884 6

पू. साध्वी श्री संयमज्योति श्रीजी म. ठाणा-2
श्री जैन श्वे. मू. पू. पौषधशाला,
सदर बाजार
पो. जैतारण-306 302 जि. पाली (राज.)
फोन- 7

पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विता श्रीजी म. ठाणा-2
जैन श्वे. मंदिर, खरतरगच्छ संघ
लोढ़ों का बास
पो. पाली मारवाड़-306 401 (राज.)
फोन-02932-250050 8

वल्लभ मण्डल

पू. साध्वी श्री राजेश श्रीजी म. ठाणा-6
जैन श्वे. मंदिर
पो. गीदम
जि. बस्तर (छ.ग.)
फोन- 1

पू. साध्वी श्री मंजुला श्रीजी म. ठाणा 5
जैन श्वे. मंदिर
पो. कटंगी
(म.प्र.)
फोन- 2

पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञा श्रीजी म. ठाणा 8
जैन श्वे. मंदिर
पो. अक्कलकुआं-425 412
जि. नंदुरबार (महा.)
फोन- 3

पू. साध्वी श्री स्नेहयशा श्रीजी म. ठाणा-4
जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ
जैन दादावाड़ी, 10वीं 'ए' रोड़ सरदारपुरा
पो. जोधपुर-342 003 (राज.)
फोन- 029882 433833 4

चंपा मण्डल

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म. ठाणा-10
पार्श्वपद्मावती आराधना भवन, प्रथम क्रोस,
एम.जे. नगर, डेम रोड
पो. होस्पेट-583 203, जि. बल्लारी (कर्ना.)
फोन-98457-11450 1

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा-5
श्री जिनदत्तसूरि जैन धर्मशाला
85, अम्मन कोइल स्ट्रीट,
पो. चैन्नई - 600 079
फोन : 044 - 25207875 2

पू. साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म. ठाणा-3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ सांचोर
विल्सन स्ट्रीट, वी.पी. रोड
पुलिस चौकी के सामने
पो. मुंबई-400 004 फोन- 3

पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णा श्रीजी म. ठाणा-6
श्री अजितनाथ जैन श्वे. भवन, अक्खीपेटे,
गोणी बसवेश्वर मंदिर के पास
पो. हुविनहडगली-583219 (कर्नाटक)
फोन-94486-54982 4

पू. साध्वी श्री विश्वरत्ना श्रीजी म. ठाणा-3
श्री शांति वल्लभ टी वी एस लुंबिनी जैन संघ,
सिद्धि वल्लभ आराधना भवन, मोक्ष मार्ग 4013
127 - ए ब्रिक्लीन रोड़, पुरुषवाक्कम
चैन्नई - 600 007 5

पू. साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म. ठाणा-4
श्री आदिनाथ जैन श्वे. मू.पू. संघ
गांधी बाजार
पो. शिमोगा-577201, जि. शिमोगा (कर्ना.)
फोन-97405-74741 6

प्रमोद मण्डल

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं
पू. बहिन म. डॉ श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा-6
श्री जिन कुशलसूरि जैन दादावाड़ी
एम.जी. रोड
पो. रायपुर - 492 001 (छतीसगढ़) 1

पू. साध्वी डॉ श्री शासनप्रभाश्रीजी म. ठाणा-2
श्री पार्श्वनाथ जिनालय
इतवारी बाजार
पो. धमतरी - 493 773 (छ.ग.)
फोन-07722-240047 2

पू. साध्वी श्री गुणरंजना श्रीजी म. ठाणा 6
श्री सुमतिनाथ जिनालय,
जिनकुशलसूरि दादावाड़ी, रेल्वे स्टेशन रोड़,
बघाना, **पो. नीमच** - 458 441 (म.प्र.)
फोन-094251-06471 3

पू. साध्वी डॉ श्री नीलांजनाश्रीजी ठाणा 3
जैन बगीचा, सदर बाजार
पो. राजनांद गाँव - 491 441
(छ.ग.)
फोन - 077442 24696 3

पूज्य मोहनलालजी म.सा. समुदाय

पू. साध्वी श्री कुशल श्रीजी म. ठाणा 1
श्री केसरियानाथ धर्मशाला मोती चौक
पो. जोधपुर - 342 001
(राज.)
फोन- 1

पू. साध्वी श्री विरतियशा श्रीजी म. 2
जयानंद भवन, ओसवाल मोहल्ला
पो. भानपुरा - 458 775
जि. मन्दसौर (म.प्र.)
फोन- 2

अन्य विविध मण्डल

पू. साध्वी श्री महेन्द्रश्रीजी म. ठाणा - 3
नई पोषधशाला, धनकुटा गली,
जनकपुरा
पो. मंदसौर - 458001 (म.प्र.)
फोन- 1

पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा-5
श्री जैन श्वे. मंदिर
पो. चौहटन - 344 702
जि. बाड़मेर (राज.)
फोन- 2

पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.
जैन श्वे. मंदिर, पद्मावती नगर
अभिनंदन कॉलोनी के पास
पो. मंदसौर - 458 001 (म.प्र.)
फोन- 3

॥ श्री शांतिनाथाय नमः॥ ॥ दादा गुरुभ्यो नमः॥

॥ प. पू. गणनायक श्री सुखसागर गुरुभ्यो नमः॥

परमात्मा महाबीर स्वामी के चरण रज से पबित्र

सत्यपुर (सांचोर) नगरे

भव्य - चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

भावभरा आमंत्रण

आज्ञा एवं आर्शीवाद
प.पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर
गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

दिव्य आशीष
प.पू. छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि, महत्तरा पद विभूषिता गुरुवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा.

परम पावन निश्रा

प. पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. समुदायवर्ती

प. पू. छ. ग. रत्न शिरोमणी, महत्तरा पद विभूषिता गुरुवर्या श्री मनोहर श्रीजी म.सा. की सुशिष्याऐं

प.पू. प्रवर्तिनी कीतिप्रभा श्रीजी म.सा. मंडल प्रमुखा

प.पू. मनोरंजना श्रीजी म.सा. के आर्शीवाद से

गुणसंस्कार भारती प.पू. लयस्मिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3

परम पावन प्रवेश शुभ दिवस

द्वि. आषाढ़ सुदी 6, गुरूवार, दि. 23 जुलाई 2015
सुबह 8.30 बजे

चातुर्मास प्रवेश पुराना बस स्टेंड भोजनशाला से प्रारंभ होकर दोसीया वास होते हुए कुशल भवन में होगा। अतः सकल श्री संघ को पधारने का हार्दिक आमंत्रण है।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ – सांचोर (सत्यपुर)

कुशल भवन, सुनारो का बास, सांचोर. 343041, (जालोर–राज.)

फोन नं: 02979–283154

॥ श्री शांतिनाथाय नमः॥ ॥ दादा गुरुभ्यो नमः॥

॥ प. पू. गणनायक श्री सुखसागर गुरुभ्यो नमः॥

धर्म नगरी मुंबई महानगरे

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

हार्दिक आमंत्रण

आज्ञा एवं आर्शीवाद
प.पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर
गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

दिव्य आशीष
प.पू. महत्तरा पद विभूषिता
पूज्या श्री चंपाश्रीजी म.सा.

परम पावन शुभ दिवस

द्वि. आषाढ़ सुदी 3, रविवार, दि. 19 जुलाई 2015,
सुबह 8.30 बजे

परम पावन निश्रा

प. पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. समुदायवर्ती

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता चंपा श्री जी म.सा.

समतासाधिका प.पू. जितेन्द्र श्री जी म.सा. की सुशिष्या

प.पू. धवल यशस्वी विमलप्रभा श्री जी म.सा. की चरणाश्रिता

मधुरभाषी प.पू. हेमरत्ना श्री जी म.सा.

प.पू. जयरत्ना श्री जी म.सा., प.पू. नूतनप्रिया श्री जी म.सा.

चातुर्मासिक प्रवेश नवमी खेतवाड़ी से प्रारम्भ होकर ओपेरा हाऊस, वी.पी. रोड़, विल्सन स्ट्रीट, बाबुभाई देसाई रोड़ होता हुआ कपोल वाड़ी (दुसरी पांजरापोल) में होगा। अतः सकल श्री संघ से चातुर्मासिक प्रवेश प्रसंगे पधारने का हार्दिक आमंत्रण हैं।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ– सांचोर (मुंबई)

डॉ. विल्सन स्ट्रीट, वी. पी. रोड़ पोलीस चोकी के पास, मुंबई– 4.

फोन नं. 66109406

मुख्य कार्यालय, कुशल भवन, सुनारो का बास, सांचोर–343041 (जालोर. राज.)

समाचार दर्शन

पूज्य गणाधीशजी हैदराबाद पधारे

प्रेषक मुकेश प्रजापत

पूज्य खरतरगच्छाधिपति उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनिश्री समयप्रभसागर जी म.सा पू. मुनिश्री विरक्त प्रभसागरजी म.सा. पू. मुनिश्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा पू. बाल मुनि श्री मलय प्रभसागरजी म. ठाणा 3 सिंघनूर से विहार कर रायपुर में नूतन दीक्षित साध्वी श्री त्रियसूत्रांअना श्रीजी म.सा. को बडी दीक्षा प्रदान कर ता. 11 जून को हैदराबाद पधारे। फीलखना श्री संघ द्वारा भव्य वरघोडा निकाला गया। स्मरण रहे आज से 8 वर्ष पूर्व यहीं पर पूज्य श्री का ऐतिहासिक चौमासा संपन्न हुआ था।

पूज्य श्री शिष्य ..... मुनि समयप्रभसागरजी म.सा. मुनि विरक्तप्रभसागरजी म.सा मुनि श्रेयांसप्रभसागर जी म.सा. के आंसारिक घर पर पगले भर वाये गये।

संभा को संवोधित करते हुए पूज्य गुरूदेव गणाधीशजी म. ने कहा हैदराबाद रत्नभूमि है। ये तीनों मुनि यहीं की देन है। चार दीक्षाऐं एक ही परिवार की यहां से हुई है। पू. मुनि श्री मनित प्रभसागर जी म. ने श्री प्रासंगिक प्रवचन दिया।

हैदराबाद रत्न पू. मुनि श्री विरक्ताप्रभसागर जी म. एवं श्रेयांसप्रभ सागरजी म. के सारगर्नित प्रवचनों को श्रवण कर श्री संघ में आनंद मंगल छा गया।

पूज्य श्री ने कहा इनकी दीक्षा को मात्र 56 वर्ष हुआ है। निश्चित ही ये रत्न हैदराबाद का नाम रोशन करेंगे।

इस अवसर पर जयराजजी देवडा ..... मोतीलालजी ललवानी आदि ने अपनी भावभरी वंदनाऐं प्रस्तुत की। संचालन हस्तीमलजी हुंडिया ने किया।

प्रवचन के बाद स्वामिवात्सल्य रखा गया जिसका लाभ हैदराबाद के मुनित्रय के परिवारजन बाड़मेर निवासी श्रीमती पांचीदेवी बोरीवासजी बोधरा परिवार द्वारा लिया गया।

सम्मेलन मालपुरा में करने की विनंती आगामी मार्च-अप्रेल महिने में प्रस्तावित खरतरगच्छ साधु साध्वी सम्मेलन मालपुरा में करने हेतु पूज्य गुरूदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. से की गई।

जैन श्वे. खरतरगच्छ श्री संघ जयपुर के पदाधिकारी हैदराबाद पूज्य श्री की सेवा में पहुंचे। श्री प्रकाशचंदजी लोढ़ा। अनूपजी पारख, विश्वासजी जैन, विजयजी संचेती ने भावभरे शब्दों में निवेदन किया कि मालपुरा दादा गुरूदेव का धाम है। हम सारी व्यवस्थाओं के लिये तत्पर है। यह लाभ हमें प्राप्त होना चाहिये।

पूज्य श्री ने कहा- सम्मेलन निश्चित है। 250 से अधिक साधु-साध्वियों की उपस्थिति होगी। मालपुरा हमारे संपूर्ण

गच्छ का श्रद्धा धाम है। में अवश्य विचार करूगा। सभी साधु साध्वियों से विचार विमर्श चल रहा है। मै जयपुर संघ से करना चाहता हूँ कि सम्मेलन यदि मालपुरा में होता है, तब तो आपको सारी व्यवस्थाऐं करनी ही है। कारणवश दूसरी जगह होता है, तब भी आपको पूरा भोग देना है।

जयपुर संघ की ओर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया गया।

महासंघ के पदाधिकारी हैदराबाद पधारे पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. के सेवा में अ.भा. खरतरगच्छ महासंघ के अध्यक्ष श्री हिरखचंदजी ..... महामंत्री ..... डी. जैन ता 18.जून को हैदराबाद पहुंचे। पूज्य श्री के साथ गच्छ की वर्तमान परिस्थितियां, सम्मेलन आदि विषयों पर चर्चा विचारणा की गई।

पूज्य श्री ने कहा- जो भी घटनाक्रम हुआ, वह ..... है। पर हम सभी को गच्छ व समुदाय के हित में अनुशासन बनाये रखना है तथा मर्यादा का पालन करना है।

डुठारिया में प्रतिष्ठा

पाली जिले के छाजेड परिवारों के गांव डुठारिया में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिष्ठा की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा में ता. 12 जून 2015 को संपन्न हुई। इस प्रतिमा की अंजनशलाका पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के करकमलों से सिंधनूर में संपन्न हुई थी।

श्री पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा कारणवश खंडित हो जाने के कारण यह पुनः प्रतिष्ठा श्री संघ द्वारा आयोजित पंचाह्निका महोत्सव के साथ संपन्न हुई। पुनः प्रतिष्ठा का उत्साह अनुमोदनीय था।

इस अवसर पर पूज्य मुनिश्री ने फरमाया- परमात्मा को हृदय में बसाकर उनकी भक्ति करनी है। परमात्मा की भक्ति तिरने का अनूठा उपाय है।

रायपुर के विभिन्न उपनगरों में
पू. बहिन म.सा. का प्रवास

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

तिमनगढ़ प्रतिष्ठा संपन्न

मासलपुर (करौली) कस्बे से 13 किमी दूर ऐतिहासिक तिमनगढ़ किले के मुख्य द्वार के समीप निर्माणाधीन जैन श्वेताम्बर पार्श्वनाथ मंदिर में गुरूवार को भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा की गई। जैन मुनि श्री मणिरत्न सागरजी म.सा. के सानिध्य में आयोजित समारोह में अहमदाबाद निवासी भूषण भाई शाह से भगवान पार्श्वनाथ व 24 तीर्थंकरो की प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा की गई।

इसे पूर्व बैंड-बाजे के साथ कलश यात्रा निकाली गई। रथ में मुंबई निवासी दामोदर जैन सवार थे। इस मौके पर जैन मुनि मणिरत्न सागरजी म.सा. ने कहा कि तिमनगढ़ पूर्व में तीर्थ स्थल रहा है। तीर्थ के रूप में इसकी बड़ी महिमा थी, लेकिन आक्रांताओं ने इस तीर्थ को नष्ट कर दिया। मंदिर बनने से क्षेत्र में भक्ति, धर्म व शांति की बयार बहेगी। कार्यक्रम में सपोटरा विधायक रमेश मीणा, करौली विधायक दर्शन सिंह गुर्जर व जिला प्रमुख अभय कुमार मीणा भी मौजूद थे।

चेन्नई टी. नगर में शासन प्रभावना

पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 विहार करते हुए चेन्नई नगर के टी.नगर उपनगर में पधारे। जहाँ उनकी निश्रा में विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रतिदिन विविध विषयों पर प्रभावशाली प्रवचन आयोजित हुए। जिसमें बडी संख्या में श्रावक श्राविकाओं ने लाभ लिया।

पूज्य उपाध्यायश्री के गच्छाधिपति पद प्रदान के उपलक्ष्य में श्री संघ द्वारा पार्श्व पद्मावती महापूजन का आयोजन किया गया। आरती आदि का लाभ श्री मन्नुकुमारजी अनोपचंदजी भंसाली परिवार ने लिया। सौ. प्रकाशदेवी रमेशकुमारजी पारख की ओर से अलंकार अर्पण किये गये।

पूज्याश्री का चातुर्मास चेन्नई के धोबीपेठ में होने जा रहा है। प्रवेश ता. 25 जुलाई को संपन्न होगा।

श्री सांखलाजी का स्वर्गवास

जगदलपुर निवासी सुप्रसिद्ध करोडपति अभिकर्त्ता श्री नेमीचंदजी सांखला का स्वर्गवास विशाखापत्तनम में ता. 15 जून 2015 को हो गया। आप 64 वर्ष के थे। मरूधर में बालेसर निवासी थे। श्री विजयलालजी सौ. कसुम्बीबाई के सुपुत्र श्री नेमीचंदजी परम गुरु भक्त थे। अत्यन्त सरल स्वभाव के धनी श्री सांखलाजी को साधर श्रद्धांजली अर्पित है। – चेतन सांखला, जैपुर

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी महाराज साहब आदि ठाणा 6 सिंधनूर, पार्श्वमणि तीर्थ, रायचूर होते हुए ता. 16 जून को हैदराबाद फीलखाना पधारे। जहाँ पूज्यश्री का दो दिवसीय प्रवास रहा। वहाँ से विहार कर सिकन्द्राबाद, करीमनगर, बेलमपल्ली, आसिफाबाद होते हुए ता. 6 जुलाई को चन्द्रपुर पधारे। वहाँ से विहार कर मूल, गडचिरोली, मानपुर, मोहला, चौकी, डोंगरगाँव, अर्जुनी होते हुए ता. 18 जुलाई को राजनांदगांव पधारे।

रायचूर से हैदराबाद तक की विहार सेवा में सिंधनूर निवासी श्री आनंद नाहर, बाद के विहार में चेन्नई निवासी श्री सुरेन्द्रजी कोठारी एवं श्री प्रकाशजी लोढा की अनुमोदनीय प्रशंसनीय सेवाऐं रही। रायपुर की ओर से श्री गौरव जैन साथ रहे।

पूज्यश्री का ता. 19 जुलाई को राजनांदगाँव में छत्तीसगढ प्रवेश का भव्य समारोह आयोजित किया गया है। जिसकी अध्यक्षता छत्तीसगढ राज्य के मुख्य मंत्री डॉ. श्री रमणसिंह करेंगे। चातुर्मास समिति के संरक्षक नगर परिवहन मंत्री श्री राजेशजी मूणत आदि की सम्माननीय उपस्थिति रहेगी। समस्त छत्तीसगढ से श्रावक श्राविकाओं का आगमन होगा।

पूज्यश्री के छत्तीसगढ पदार्पण की खुशियों का वातावरण संपूर्ण राज्य में छाया हुआ है।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री 21 जुलाई को दुर्ग, 22 को भिलाई-3, 23 को कैवल्यधाम होते हुए ता. 24 को रायपुर सदर पधारेंगे। ता. 25 जुलाई को पूज्यश्री एवं पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि का चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश समारोह होगा।

संपर्क :

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

द्वारा श्री जैन श्वेताम्बर दादावाड़ी

रायपुर - 492001 (छ. ग.),

फोन : मुकेश- 09784326130, मेल- jahajmandir99@gmail.com

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 110

चातुर्मास का महापर्व अत्यन्त निकट है। इस काल ऐसा काल है जब व्यक्ति अपना समय और चिन्तन धर्म की आराधना में नियोजित करता है। जैन धर्मानुयायी पूरे भारत में फैले हुए हैं। मुनिवृंद आदि के चातुर्मास होंगे और घर-घर तथा नगर-नगर में ज्ञान और ध्यान के दीप जलेंगे।

चातुर्मास में जो धर्म-आराधना होती है, उनके 23 भेद-उपभेद प्रस्तुत बॉक्स में दिये गये है, उन्हें चौखाना करें और नीचे बने रिक्त स्थान में अंकित करें।

उदाहरणार्थ-गुरूवंदन दिया गया है। शेष 22 में से 16 सही होने जरूरी है।

दा	व	प्र	भु	पू	जा	च	य	ल	ह	द	पौ	जा	द	ध
नी	अ	रू	प	का	म	द	स्वा	ध्या	य	वि	ष	न	दू	र्म
जि	मौ	भी	ज	री	आ	ह	म	ला	क	श	ध	दा	चू	क
न	क	म	ल	चॉ	त्म	त	त्व	च	र्चा	व	द	त्र	ध	था
द	द	नी	प्रे	प	चिं	र	णा	ही	र	क्ष	तू	पा	ण	र्ग
र्श	पी	द	जा	चा	त	लू	हु	त	प	स्या	चा	सु	त्स	वा
न	फ	व	मी	की	न	**गु**	भा	र्या	का	ल	र्य	यो	प्र	क
वि	क	दा	ध्या	न	ध	र	**रू**	वा	द	च	का	वि	ति	म
त्या	भा	द	ह	त	ह	ख	पु	**वं**	ह्म	सं	य	म	क्र	च
ग	दि	म	क	दा	वा	र	त्र	ब्र	**द**	कू	ल	जा	म	ल
ह	व्य	यि	नी	चि	से	क	प्र	व	च	**न**	श्र	व	ण	णा
र	मा	री	मा	सा	ध	र्मि	क	वा	त्स	ल्य	न	म	दा	य
सा	कू	दा	छ	य	वा	स	त्सं	ग	व	र	ची	क	ख	ज

1. ..... 2. .....

3. ..... 4. .....

5. ..... 6. .....

7. ..... 8. .....

9. ..... 10. .....

11. ..... 12. .....

13. ..... 14. .....

15. ..... 16. .....

17. ..... 18. .....

19. ..... 20. .....

21. ..... 22. .....

जहाज मन्दिर पहेली
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400004 (महा.) मो. : 98693 48764

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 अगस्त तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल सितम्बर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ] जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

जहाज मंदिर पहेली - 108 का सही उत्तर

1. अंजना	2.सुंदरी	3.मलयासुंदरी	4.मयणासुंदरी	5. चंदनबाला	6. द्रौपदी
7. प्रभावती	8. चेलना	9. मदनरेखा	10. सुलसा	11. कौशल्या	12. कुंती
13. पद्मावती	14. ब्राह्मी	15. शिवा	16. मृगावती	17. सीता	18. ऋषिदत्ता
19. राजीमती					

पुरस्कार विजेता

प्रथम बधाई पुरस्कार-फीणी बेन बाफना-कोटूर

छह प्रेरणा पुरस्कार-शकुंतला कांकरिया- हैदराबाद, मधु जैन-ऊँटी, सिम्पल जैन- मुम्बई, वीना जैन- जयुपर, चंद्रसिंह जैन- उदयपुर, प्रियंका बच्छावत- जोधपुर

इनके उत्तरपत्र त्रुटिरहित थे- साध्वी गुणोदयाश्रीजी- चौहटन, साध्वी तत्वदर्शनाश्रीजी- पालीताना, साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी- कैवल्यधाम, साध्वी नीतिप्रभाश्रीजी- कैवल्यधाम, साध्वी विज्ञांजनाश्रीजी- कैवल्यधाम, जयपरु से- भंवरबाई खवाड, सुरेश खवाड, पुष्पलता नाहटा, पिस्ता गुलेच्छा, सुनीता जैन, विमल लोढा, मंजू बम, सीमा जैन, मनीला पारख, जया जैन, प्रेमा दुगड, पदम चौधरी, स्नहेलता चौरडिया, शांतिदेवी जैन- जोधपुर, पारसमल जैन-कोटूर, सरसलता जैन-दिल्ली, अमी जैन-तलोदा, चाहत जैन-मालपुरा, सविता जैन-मुम्बई, शोभा वैद-पनरूदी, राजेश खवाड-किशनगढ, गौतमचंद जैन-कुरींजीपाडी, माना चतुरमुथा-खरियारोड़, सुशीला कवाड-तिरूपातुर, जयश्री कोठारी-भाईन्दर, चंद्रा कोचर-भाईन्दर, सोनु गोलछा-कोण्डा गॉव, पवन तातेड-अहमदाबाद, सुनीता बलाई-पाली, अंजलि चोपडा-कांकेर, अर्पित रामपुरिया-मातपुरा, शशि पामेचा-जोधपुर, सरला गोलछा-लालबर्रा, सुशीला कोचर-अक्कलकुवा, विनीता बोथरा-अहमदाबाद, टीना जैन-अक्कलकुवा, आशीष जैन-अक्कलकुवा, इन्द्रा संकलेचा-हैदराबाद, एकता गोलछा-तिरूपातुर, प्रमन्नचंद डागा-चैन्नई, सरोज गोलछा-राजनांदगाँव, नरेश गुलेच्छा-अक्कलकुवा, सुशीला जीरावला-जोधपुर, जेठीबाई कोठारी-फलोदी, अंशुल रामपुरिया-मालपुरा, सौम्या गोलछा-महासमुंद, पुष्पा डोसी-ब्यावर, संगीता गोलछा-कोण्डागाँव, शांता वैद-जोधपुर, कविता जैन-बामनिया, कामिनी मेहता-जोधपुर, किरण गोगड-दुर्ग, तारा कोठारी-भाईन्दर, राज भण्डारी-बूंदी, लब्धि गुलेच्छा-बालाघाट, साक्षी डागा-चैन्नई, चेतना बच्छावत-अजमेर, शिवकुमार गोलछा-लालबर्रा, सोभागमल कोठारी-ब्यावर, मिनाक्षी संकलेचा-अक्कलकुवा, पुष्पा जैन-निम्बाहेडा, किशोर कोठारी-अमलनेर, जसराज कोचर-अक्कलकुवा, निकिता जैन-ऊटी, मनोहरी देवी बाफणा-नंदूरवार, लवेश जैन-मालपुरा, मोना मेहता-इन्दौर, निध्यान गोलेच्छा-जोधपुर, सरला जैन-कुरींजीपाड़ी, श्वेता भण्डारी-बूंदी, सुशीला भंडारी-कोटा, पक्षाल धारीवाल-कोटुर, भारती बोथरा-जियांगज, सुचित्रा भंसाली-नौयडा, त्रिशा जैन-बून्दी, नीरज जैन- उदयपुर, विनीता पटवा-जालोर, नमिता जैन-उदयपुर, पायल वालिया-धुलिया, सरोजवेन बोथरा-तलोदा, कृति वेगाणी-भाइंदर, रमेश लुणिया-शेरगढ़, तारा कवाड-दोंडाईचा, ममता बाफणा-नंदूरबार, मीना मेहता-बैंगलोर, शोभा बोथरा-विजयनगरम, पिंकी कवाड़-तिरूपातुर, प्रवेश बैद-कडलूर, आरती लसोड़-इन्दौर, अंजना सोलंकी-तिरूपुर, संगीता वुरड़-ब्यावर, चित्रा झाबक-वड़ोदरा, अंजू वैद-जोधपुर, प्रितिका चतुरमुथा-यरीघाररोड़, लीला कोचर-चैन्नई, सुमित्रा दांतेवाड़िया-चैन्नई, भरत प्रजापत-बाड़मेर, ईशिता संकलेचा-चैन्नई, कंचनलता चोपड़ा-रायपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, कली बाफणा-नंदुरबार, किरण वैदमुथा-रायपुर, विनीता बच्छावत-फलोदी, सुन्दरीबाई राखेचा-त्रिची, विमलादेवी ललवाणी-तिरुपातुर, पुष्पा धारीवाल-कोट्टूर ।

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर एक बडे अपराध में पकडा गया था। वह जेल में था। उसे सजा होने वाली थी। वह जानता था कि मुझे फांसी से कम सजा नहीं होगी। सजा का विचार करते ही वह परेशान हो रहा था।

उसने अपने वकील से कहा– कुछ भी करना पडे! पैसे जितने भी लगे, लगे! पर मुझे फांसी मत होने देना। कैसे भी करके मेरी सजा कम करवा देना। आजीवन कारावास करवा देना।

वकील ने कहा– चिंता मत करो। तुम्हारी सजा आजीवन कारावास करवा दूंगा। पांच जजों की बेंच तुम्हारा फैसला सुनायेगी। उनमें से एक जज मेरा मित्र है। मैं उससे बात कर लूंगा।

वकील उस जज के पास पहुँचा और अपना निवेदन प्रस्तुत किया। दोस्ती का वास्ता दिया।

जज ने उसे आश्वस्त किया।

दूसरे दिन फैसला सुनाया गया।

जटाशंकर यह सुनकर प्रसन्न हो गया कि उसे आजीवन कारावास की सजा हुई है। वकील भी प्रसन्न था। वह आभार व्यक्त करने के लिये जज के घर पहुँचा। जज से कहा– आपका उपकार मैं कभी भी नहीं भूलूंगा। आपने इस सजा को आजीवन कारावास में बदला। आपको परेशानी तो हुई होगी।

जज ने कहा– बहुत परेशानी हुई। उन चार जजों को समझाने में मेरा दम निकल गया। वे मान ही नहीं रहे थे। मुझे कितने ही तर्क देने पडे तब कहीं जाकर बात बनी। मुझे प्रसन्नता है कि भले मुझे जोर लगाना पडा पर तुम्हारी भावनाओं का सम्मान हो गया।

वकील ने कहा– वे चारों जज फांसी के पक्ष में होंगे!

जज ने घटस्फोट करते हुए कहा– नहीं! वे चारों तो इसे प्रबल प्रमाणों के अभाव में बरी करने के पक्ष में थे। पर तुमने कहा था कि आजीवन कारावास देना तो मैंने पूरा जोर लगाया, तब कहीं जाकर काम हुआ।

वकील का मुंह तो खुला का खुला रह गया।

ओह! वे छोड रहे थे और इन्होंने सजा करवा दी।

हमारा जीवन भी ऐसा ही है। मुक्ति हमारे हाथ में है, पर हम संसार की... संसार भ्रमण की सजा चाहते हैं। कैसे छूटे!